

② विगोत्स्की का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त Learning Theory of Vygotsky

→ विगोत्स्की की मान्यताएँ :-

तीन महत्वपूर्ण अवधारणाओं का वर्णन जो विगोत्स्की की संज्ञान विकास
थ्योरी के सम्बन्ध में किया गया है

- 1- बालक की ज्ञानवादी कुशलताएँ केवल उस समय समझी जा सकती हैं जब वह विकासोन्मुख रूप में विश्लेषण की जाती हैं।
- 2- ज्ञानात्मक कुशलताएँ शब्दों, भाषा एवं संवाद के प्रकार से मध्यस्थ होती हैं। जो मनोवैज्ञानिक यंत्रों की भाँति कार्य करती हैं।
- 3- ज्ञानात्मक कुशलताओं की उत्पत्ति होती है, सामाजिक सम्बन्धों में और सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में अंतर्निहित होती है।

Note

- (1) विगोत्स्की के विचार स्पष्ट रूप से इस बात पर बल देता है कि ज्ञानात्मक कृत्य के सामाजिक स्त्रोत हैं।
- (2) विगोत्स्की ने शब्दों, भाषा, एवं संवाद को मनोवैज्ञानिक यंत्र कहा है।

→ विगोत्स्की के आक्षेपीय एक प्रभावशाली विचार सीखने और विकास के सम्बन्धों के बारे में प्रस्तुत किये हैं।

[A] - समीपस्थ विकास का मण्डल [Zone of Proximal Development] :- यदि कोई बालक एक नई कुशलता सीख रहा है या नई समस्या हल कर रहा है, तो उसे यदि विशेषज्ञ का साथ तथा सहायता मिल जाती है तो

[B] - पाड़वाधना [Scaffolding] - यह ऐसी तकनीक है जो सहायता के स्तर में परिवर्तन लाने की है। एक शिक्षण के स्तर में एक से अधिक कुशल व्यक्ति (शिक्षक अथवा अधिक प्रज्ञा किता हुआ बालक सहायी) निर्देशन की मात्रा में अनुकूलन करते हैं। जैसे- जैसे विद्यार्थी की कुशलता बढ़ती जाती है निर्देशन का स्तर कम हो जाता है।

(C) भाषा तथा विचार [Languages And Thoughts]

विगोत्स्की का विश्वास था कि बालक भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्बन्धों में करते हैं।

- भाषा का प्रयोग आत्म निगमन के लिए आंतरिक भाषा या निजिभाषा कहा जाता है।
- विगोत्स्की के अनुसार - प्रारम्भिक स्तरों पर भी भाषा समाज केन्द्रित है।
- प्याजे ने छोटे बालकों की अँट केन्द्रित तथा समाज से अलग वाणी को महत्व दिया है।

③ ब्रुनर का संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्त Brunerian Cognitive Learning Theory

→ ब्रुनर के सीखने के सिद्धान्त में प्रमुख रूप से चार प्रक्रियाएँ के अवयवों का प्रयोग किया जाता है।

- (1) वस्तुओं, व्यक्तियों एवं घटनाओं की पहचान (Recognition of event, things and people)
- (2) उचित रचना कौशलों का विश्लेषण करना (Analysis of proper Creative Skills)
- (3) प्रत्यक्षों का विश्लेषण करना (Analysis of Concepts)
- (4) अभ्यास (Drilling)

→ ब्रुनर की मान्यता - वच्चा एक नग्न बन्दर की तरह नहीं। अपितु संस्कृतमानव की तरह है। संस्कृति के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं है।

→ ब्रुनर के अनुसार अनुदेशन (Instruction) सिद्धान्त :-

- (1) ज्ञाता के रूप बालक/व्यक्ति की प्रकृति।
- (2) दिये जाने वाले ज्ञान की प्रकृति।
- (3) ज्ञान - ग्रहण - क्रिया की प्रकृति।

→ ब्रुनर के अनुसार → तीन स्थितियाँ हैं।

- ① अधिनिमग्न (Enactive)
- ② प्रतिभापरकता (Iconic)
- ③ सांकेतिकता (Symbolic)

{ अधिगम के वक्र, पठार एवं सीखने का स्थानान्तरण } Curves, Plateau and Transfer of Learning

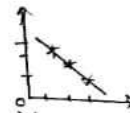
वक्र (Curves)

चार्ल्स स्किनर - "अधिगम का वक्र किसी दी गई क्रिया में उन्नति या अवनति का वर्तित काल पर विवरण है।"

→ अधिगम वक्र एक पद्धति है जिसके द्वारा हम अधिगम के रूप, आकार, मात्रा को प्रकट किया जाता है।"

→ अधिगम वक्र के प्रकार (Types of Learning Curve)

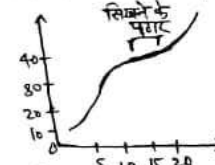
[1]- सख रेखीय वक्र (Straight line Curve) →



यह वक्र सीखने की प्रगति को लगातार बढ़ते हुए व्यक्त करता है। यह वक्र बहुत कम दशाओं में पाया जाता है।

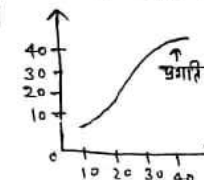
[2]- उन्नतोदर वक्र (Convex Curve) अथवा तृणात्मक उन्नति सूचक वक्र

इस प्रकार के वक्र में अधिगम की क्रिया में आरम्भ में अधिक प्रगति दिखायी पड़ती है। अभ्यास के बढ़ने के साथ-साथ उन्नति की शिथिल पड़ती जाती है और वक्र अन्त में सीधा रेखा (पठार) के रूप में हो जाती है। अधिकतर इसी तरह के वक्र प्राप्त होते हैं।



[3]- नतोदर वक्र या घनात्मक उन्नति सूचक वक्र
[Concave Curve or Positive Acceleration Curve]

इस प्रकार के वक्र में उन्नति धीरे-धीरे होती है जब सीखने की गति प्रारम्भिक काल में धीमी रहती है। और बाद में सीखने की गति उन्नति होती है, तब जो वक्र बनेगा वह नतोदर प्रकार का होगा।



[4] मिश्रित वक्र या अवग्रहास वक्र

मिश्रित वक्र या अवग्रहास वक्र पृथक् से कोई वक्र नहीं-

होता वास्तव में यह नतोदर तथा उन्नतोदर वक्रों का मिश्रण मात्र है। इस प्रकार के वक्र में प्रारम्भिक क्षणों में धीमी रहती है फिर तीव्र हो जाती है इसके पश्चात् धीमी और फिर तीव्र हो जाती है।



• प्रारम्भिक गति धीमी → तीव्र गति → धीमी गति → तीव्र गति = मिश्रित वक्र

→ अधिगम वक्र को प्रभावित करने वाले तत्व या कारक

- 1- पूर्वानुभव [Preexperience]
- 2- आभास [Feeling]
- 3- सरल से कठिन की ओर [From easy to Complex]
- 4- कौशल [Skill]
- 5- उत्साह [Excitement]

→ वक्र के चढ़ाव और उतार के कुछ प्रमुख कारण →

- 1- उत्तेजना (Excitement)
- 2- अनुकूलन (Adaptation)
- 3- थकान (Fatigue)
- 4- अभ्यास (Exercise)
- 5- प्रोत्साहन (Stimulation)

[अधिगम पठार Learning Plateau]

→ जब हम कोई नयी बात सीखते हैं तब हम सीखने में लगातार उन्नति नहीं करते। हमारी उन्नति कभी कम और कभी अधिक होती है कुछ समय बाद ऐसा भी बरबस आता जब हमारी उन्नति बिल्कुल रुक जाती है। जिसे हम अधिगम के पठार कहते हैं जो निम्न वजहों से होता है।

→ ज्ञानावरोध (Knowledge Limit), प्रेरणावोध (Motivation Limit), एवं शारीरिक क्षमता अवरोध (Psychological Limit) - थकान, अधिक अभ्यास, सिर्फ

→ अधिगम पठार का समय -

होरेन्स - "सीखने की अवधि में पठार साधारणतया कुछ दिनों, कुछ सप्ताहों या कुछ महीनों तक रहते हैं।

→ अधिगम पठार के कारण [Causes of Learning Plateau]

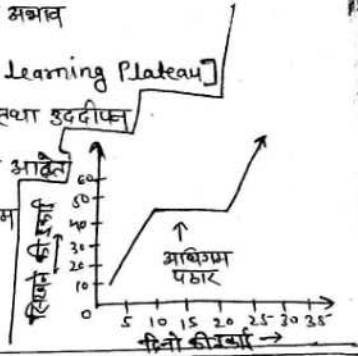
- 1- मनोशारीरिक सीमा
- 2- नकारात्मक कारक
- 3- कार्य की जटिलता
- 4- सीखने की अनुचित विधि
- 5- पुरानी आदतों का नयी आदतों से संघर्ष
- 6- जटिल कार्य के केवल एक पक्ष पर ध्यान
- 7- अभ्यास का अभाव
- 8- उपयुक्तता न होना

10 - व्यवधान

11 - प्रेरणा का अभाव

→ अधिगम पठारों का निराकरण [Removal of Learning Plateau]

- 1- सीखने के समय का वितरण
- 2- उत्साह के साथ अधिगम
- 3- पाठ्य-सामग्री का संग्रह
- 4- शिक्षण विधि में परिवर्तन
- 5- प्रेरणा तथा इवदीप्ति
- 6- अच्छी आदतें
- 7- विश्राम



[अधिगम का स्थानान्तरण Transfer of Learning]

कालसनिक (Alanic) :- "शिक्षा के स्थानान्तरण से आशय एक परिस्थिति में प्राप्त ज्ञान, आदत, निपुणता, अभियोग्यता का दूसरी परिस्थिति में प्रयोग करना है।"

→ अधिगम स्थानान्तरण के अर्थ को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

- 1- स्थायी शिक्षा (Permanent Learning)
- 2- स्थिति का चयन (Selection of Position)
- 3- प्रभाव (Effect)

[अधिगम स्थानान्तरण के प्रकार Classification of Transfer of Learning]

[1]- धनात्मक स्थानान्तरण [Positive Transfer] - जब एक परिस्थिति में सीखा

→ सीखा गया ज्ञान या कौशल दूसरी परिस्थिति में ज्ञान या कौशल को अधिस्त करने में सहायक सिद्ध हो।

[2]- ऋणात्मक स्थानान्तरण [Negative Transfer] - ऋणात्मक या नाकारात्मक

अधिगम स्थानान्तरण तब होता है जब पूर्व सीखित ज्ञान नवीन ज्ञान के सीखने में रुकावट उत्पन्न करता है।

[3]- शून्य स्थानान्तरण [Zero Transfer] - जब पूर्व सीखित ज्ञान नवीन ज्ञान सीखने में न सहायता करता है और न रुकावट पैदा करता है तब शून्य स्थानान्तरण होता है।

→ अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त [Principles of Transfer of Learning]

(A) - स्थानान्तरण के प्राचीन सिद्धान्त -

- सीखने के स्थानान्तरण के प्राचीन सिद्धान्त में 'मानसिक शक्तियों के सिद्धान्त' प्राचीन और औपचारिक मानसिक परिक्षण' के सिद्धान्त सम्मिलित हैं जिनमें मानसिक शक्तियाँ निम्न हैं। - अवधान, स्मृति, कल्पना, तर्क इत्यादि, स्वभाव, कभी-कभी चरित्र, एवं अन्य गुण।

[B] - स्थानान्तरण का आधुनिक सिद्धान्त :- (Cont)

- (1) थार्नडाइक का सिद्धान्त/समरूप तत्वों का सिद्धान्त - थार्नडाइक ने सीखने के प्रयोगों में पाया कि जब व्यक्ति सीखित अनुभवों में से नवीन सीखने के लिए समरूप तत्वों को धाट लेता है और उनका प्रयोग करके शीघ्र सीख लेता है तो इसे समरूप तत्वों का सिद्धान्त कहा जाता है।

- (2) C.H. Judd का सिद्धान्त/समान्यीकरण का सिद्धान्त - आपने सीखने में स्थानान्तरण पर प्रयोग किये और नवीन सिद्धान्त को प्रतिपादित किया इसको समान्यीकरण का सिद्धान्त कहते हैं। बालक को अपने विकास के साथ-साथ विभिन्न अनुभव अजित करता है यह निष्कर्ष अनुभव मिलाकर एक निष्कर्ष निकालते हैं जिसे सिद्धान्त कहते हैं। भविष्य में बालक इसी सिद्धान्तों का प्रयोग करके जीवन की समस्या सुलझाने में करता है।

- (3) वाग्ले का सिद्धान्त/आदर्श एवं मूल्यों का सिद्धान्त :- सीखने में स्थानान्तरण को बहुत महत्वपूर्ण माना है। समान्यीकरण एवं समान तत्वों के पीछे आदर्श एवं मूल्य माने जाते हैं जो सीखने के स्थानान्तरण को सफल बनाते हैं। जिनमें बालक के विकास के साथ-साथ उनके आदर्शों एवं मूल्यों का गठन होता है।

→ ★ सकारात्मक अधिगम स्थानान्तरण का शिक्षण ★

- | | |
|-------------------------------|---------------------------|
| 1 - सीखने वाले की तैयारी | 4 - विषय का पूर्ण ज्ञान |
| 2 - उपयुक्त विधियों का प्रयोग | 5 - समान तत्वों का चयन |
| 3 - समान्यीकरण का प्रशिक्षण | 6 - स्थानान्तरण का अभ्यास |

अभिप्रेरण या अभिप्रेरण MOTIVATION

- MOTIVATION उत्पत्ति → MOTAM (मोटम) - (मूव या इन्साइट तु रेस्क)
- प्रेरणा एक संचिका है जो जीव को क्रिया के प्रति उत्तेजित करती या उकसाती है।

MEANING

जिलफोर्ड (Gulliford) - "प्रेरणा एक मानसिक दशा या कारक जिसकी प्रवृत्ति क्रिया को आरम्भ करने या बनाये रखने में होती है।"

(A) { अभिप्रेरण का व्यापक अर्थ } Wide Meaning of Motivation

- | | |
|----------------------------|-----------------------|
| 1 - प्रेरक (Motive) | (5) - रुचि (Interest) |
| 2 - प्रणोदक (Drive) | (6) - लक्ष्य (Goal) |
| 3 - प्रोत्साहन (Incentive) | |
| 4 - उत्सुकता (Curiosity) | |

(B) { अभिप्रेरण के प्रकार } Types of Motivation

[1] - आन्तरिक अभिप्रेरण (Internal Motivation)

- (a) मनो-दैहिक अभिप्रेरण - यह शरीर एवं मास्कुलर से सम्बन्धित है - जैसे - खाना, पीना, काम, चेतना, आदत, भाव, नेत्र एवं संवेगात्मक प्रेरणा।
- (b) सामाजिक अभिप्रेरण - समाज के वातावरण से ही सीखी जाती है। जैसे - स्नेह, प्रेम, सम्मान, ज्ञान, पद नेतृत्व एवं यश आदि।
- (c) व्यक्तिगत अभिप्रेरण - इसके अन्तर्गत, रुचियाँ, दृष्टिकोण, स्वार्थ, नैतिक मूल्य, क्रीडा, खेलकूद, प्रतिष्ठा, अभिलाषा, आत्मप्रकाशन आदि।

[2] - बाह्य अभिप्रेरण [Extrinsic Motivation]

- (a) दण्ड एवं पुरस्कार (b) संस्कार (c) लक्ष्य, आदर्श और मोददेश्य प्रयत्न
- (d) अभिप्रेरण में परिणति (e) अभिप्रेरण और फल का ज्ञान
- (f) पूर्ण व्यक्तित्व का लगा देना (g) भाग लेने का अवसर देना (h) व्यक्तिगत

[C] - अभिप्रेरण के स्रोत Sources of Motivation (9mp)

→ अभिप्रेरण के चार स्रोत होते हैं।

- (1) आवश्यकताएँ (2) चालक (3) उद्दीपक (4) प्रेरक

[D] अभिप्रेरण की विधियाँ Methods of Motivation

- | | |
|---|--|
| 1 - रुचि (Interest) | 6 - ध्यान (Meditation) |
| 2 - सफलता (Success) | 7 - खेल (Game) |
| 3 - प्रतियोगिता या प्रतिद्वन्द्विता (Competition) | 8 - सामाजिक कार्यक्रम (Social Event) |
| 4 - सामूहिक कार्य (Group Work) | 9 - पुरस्कार (Prize) |
| 5 - प्रशंसा (Praise) | 10 - कक्षा का वातावरण (Classroom Teaching) |

[E] अभिप्रेरण के सिद्धान्त Principles of Motivation (9mp)

- 1 - सांस्कृतिक प्रतिमानों का सिद्धान्त →
- 2 - व्यवहार और सिखने का सिद्धान्त → प्रतिपादक स्किनर (Skinner) हैं
- 3 - क्षेत्रियता सिद्धान्त → प्रतिपादक कर्ट लेविन हैं
- 4 - मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त → प्रतिपादक विलियम मैकडगल हैं।
- 5 - मनो विश्लेषण का सिद्धान्त → प्रतिपादक फ्रायड (Freud) हैं।